



राजस्थान में मूँगफली व सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत: पद्म भूषण प्रो. रामबद्नसिंह

श्रीगंगानगर। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. रामबद्नसिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह आज बीकानेर में कृषि विज्ञान केन्द्र की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की ऊत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी



हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। बलाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बाटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से

दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था। इससे पहले कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक

डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सूजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, डॉ जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ कंशव भेहरा ने किया

पूरे विश्व में राजस्थान निभा सकता है श्री अनन्त उत्पादन में अग्रणी भूमिका- पदम भूषण प्रो. राम बदन सिंह

खबर एक्सप्रेस

समूह प्रथम पंचि प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूँगफली का आदान प्रदान किया गया

बीकानेर, 12 जून। केन्द्रीय कृषि विषयविद्यालय इम्फाल के पूर्व कृषि अधिकारी व कृषि वैज्ञानिक वयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पट्टपन्नग जी, राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सलाने की खेती को और बढ़ावा देने को चाहता है। उन्होंने कहा कि भास्तु हर साल खाने के लेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देता है अतारूर्ति करता है। इस पर प्रतिक्रिया करीब 50 हजार फरोह रु. कर्व होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सलाने के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सलाने का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिक्रिया 5 से 10 फीसदी तक खाने के लेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भास्तु खाने के लेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुलबार को कृषि विज्ञन केन्द्र बीकानेर को आंद से स्वामी केशवानंद संशोधनालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संरेखित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंचि प्रदर्शन के तहत मंडल, बीटनोर, बेनीसर, रोभासर, कलवनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आवृति- 110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया। प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व की श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भास्तु में होता है और भास्तु के कुल



मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा बातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जलीन और एलट में डालता है और अक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। कलाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है।

प्रो. सिंह ने बताया कि कर्वन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फॉंड इन्कर्ट्रा किया है। इस फॉंड को भास्तु सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूँ से तीन गुना

जबादा और चालत से दस गुना ज्यादा फालवर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि मिलेट्स माल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भास्तु की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नेकर बन होने के बहुते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्व को देखते हुए ही कर्व 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था।

इससे पूर्व कृषि पर्यावरण द्वारा अध्ययन कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संबंधीन से किसान अपनी आप कहा सकता है। अनुसंधान निदेशक द्वारा पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर मुश्किल बीज को उत्पादित कर बांने, बीज की साहे मछल बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक द्वारा

मुझाय चंद्र ने केवीके के काल्यों व उनकी उत्पलकियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी उन्होंने सम्मत्याएं कृषि कैवल्यनिकों को बताई। उन्निदेशक प्रसार द्वारा गवेश कुमार वर्मा ने धनवाद द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञन महाविद्यालय की अधिकारी द्वारा विमला दुक्काल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सूचन निदेशक द्वारा दाताराम, मानव संसाधन निदेशक द्वारा ए.के.शर्मा, डीएसीएस द्वारा योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक योज द्वारा पी.सी.गुप्ता, ई.जे.के. गोहू, केवीके अध्यक्ष द्वारा प्रो. सिंह, कृषि पर्यावरण की शावेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संस्थाएं में किसान उपसंघों ने किया।

केवीके बीकानेर के मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह

राजस्थान में मूँगफली-सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पद्धभूषण प्रो. रामबद्दन सिंह समूह प्रथम पर्कि प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूँगफली का आदान प्रदान किया गया

बीकानेर, (निस). केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्धभूषण प्रो. राम बद्दन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से



मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानन्द संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पर्कि प्रदर्शन

के तहत मंडल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के

कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। इससे पूर्व कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया।

मूँगफली उत्पादन की उष्टुत तकनीक पर कार्यक्रम: राजस्थान श्रीअष्ट उत्पादन में बन सकता है अग्रणी

राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत : पद्म भूषण प्रो. राम बदन

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पदाध्यक्ष पदाध्यक्ष प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न



(मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तानाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर

मिलेट्स के किसानों को बाट तकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कायों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई।

राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

पूरे विश्व में राजस्थान निभा सकता है श्री अज्ञ (मिलेट्स) उत्पादन में अग्रणी भूमिका- पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

केवीके बीकानेर के मूंगफली उत्पादन की उच्चत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह

समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूंगफली का आदान प्रदान किया गया

हिंदुस्तान से रुबरू

बीकानेर(सुरेश जैन) केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कूलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति



करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पाँच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उच्चत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान

किया गया। प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अज्ञ (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अज्ञ (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि श्री अज्ञ का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अज्ञ इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बाटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में जेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका

निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अज्ञ वर्ष घोषित किया था। इससे पूर्व कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सूजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डॉ पी.एमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.जूसा, डॉ जे.के.जौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

राजस्थान में मूँगफली व सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरतः प्रो. सिंह

श्रीगंगानगर केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. रामबदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। प्रो. सिंह आज बीकानेर में कृषि विज्ञान केन्द्र की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी



कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पर्कि प्रदर्शन के तहत मंडल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया। प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण

कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बाटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20

सम्मेलन में भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय अन्न वर्ष घोषित किया था। इससे पहले कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सूजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश

शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं.जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

गोविंद शर्मा पर केंद्रित 'बालवाटिका' के अंक का विमोचन 17 जून को

हनुमानगढ़। जिले में संगरिया के वरिष्ठ बाल साहित्य रचनाकार एवं साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत गोविंद शर्मा पर केंद्रित भीलवाड़ा की बाल साहित्य पत्रिका 'बालवाटिका' के अंक का विमोचन 17 जून को सायं पांच बजे श्रीगंगानगर में जवाहरनगर स्थित महाराजा अग्रसेन विद्या मंदिर समिति में सृजन सेवा संस्थान के तत्वावधान में होगा। सृजन के अध्यक्ष डॉ. अरुण शहैरिया 'ताइर' ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक जयदीप बिहाणी होंगे। अध्यक्षता यादे माटी कला बोर्ड के अध्यक्ष प्रह्लाद राय टाक करेंगे। सान्त्रिध्य बालवाटिका के सम्पादक डॉ. भैरुलाल गर्ग का होगा। वरिष्ठ साहित्यकार एवं उप-

राजस्थान में मूँगफली व सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पन्न भूषण प्रो. रामबद्नसिंह

श्रीगंगानगर, 12 जून। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. रामबद्नसिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। प्रो. सिंह आज बीकानेर में कृषि विज्ञान केन्द्र की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की



किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को

शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर

वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था। इससे पहले कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पी.एस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं.जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

श्री अन्न (मिलेट्स) उत्पादन में अग्रणी भूमिका : पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

■ जलतेदीप निसं, बीकानेर

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान

और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडल, बीठनोक,

बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट

में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है।

प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है।

राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जनरल-पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

केवीके बीकानेर के मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के

राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। प्रो. सिंह बुधवार का कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पर्कि प्रदर्शन के तहत मंडल, बीठोक,

कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोर्नामी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बाटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरुण

कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संबंधन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पी.एम. शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समझाएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला दुक्काल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सूजन निदेशक डॉ दाताराम,



मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं.जे.के.गोड़, केवीके संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत

बीकानेर @ पत्रिका. कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानन्द संग्रहालय सभागार में मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीक पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रुपए खर्च होते हैं।

प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है, लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार-पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। कुलपति डॉ. अरुण



कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ. पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बिजाई समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ. सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। कार्यक्रम में उपनिदेशक प्रसार डॉ. राजेश कुमार वर्मा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. विमला डुकवाल, भू साहश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ. दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ. एके शर्मा सहित अन्य उपस्थित रहे।

प्रेस नोट

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

Date- 12.06.2024

राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पदम भूषण प्रो. राम बदन सिंह

पूरे विश्व में राजस्थान निभा सकता है श्री अन्न (मिलेट्स) उत्पादन में अग्रणी भूमिका- पदम भूषण प्रो. राम बदन सिंह केवीके बीकानेर के मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह

समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूँगफली का आदान प्रदान किया गया

बीकानेर, 12 जून। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पदमभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूँगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रु. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूँगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूँगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूँगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूँगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है।

प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था।

इससे पूर्व कुलाधिपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद जापित किया।

कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू साहश्यता एवं राजस्व सूजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं. जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।